20.0 भारत-चीन के मध्य वैश्विक प्रतिस्पर्धा (ब्रिक्स और जी-20 के विशेष संदर्भ में)

- **प्रो0 (डा0) डी0सी0 कटियार**, प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन, पी0पी0एन0 कालेज, कानपुर।
  ई.मेल- dr.dckatiyar57@gmail.com

शोध सार

भारत और चीन के मध्य प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध रहे भारत से बौद्धधर्म का प्रचार चीन की भूमि पर हुआ है। 1946 में चीन के साम्यवादी शासन की स्थापना हुई 1954 में भारत-चीन के मध्य 'पंचशील' समझौता हुआ परन्तु चीन ने 1962 में मैत्री सम्बन्धों को ताक पर रख, भारत पर आक्रमण किया और 32000 वर्ग मील जमीन पर कब्जा कर लिया, तिब्बत को लेकर भारत-चीन के बीच डोकलाम, लद्दाख के अक्साई चिन, अरुणाचल प्रदेश, तवांग, गलवान आदि को लेकर विवाद जारी है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत को 'वीटो पावर' देने पर चीन की आपत्ति। किन्तु वैश्विक धरातल पर भारत का बढ़ता कद चीन को हजम नहीं हो रहा। इसी परिप्रेक्ष्य में जी-7, ब्रिक्स, जी-20 जैसे समूहों में पुनः भारत चीन के मध्य बढ़ती प्रतिस्पर्धा व कूटनीतिक दावपेंच को लेकर भविष्य में भारत को सतर्क रहना होगा।

मुख्य बिन्दु - भारत, चीन, ब्रिक्स, जी-20, कूटनीति।

सम्प्रति सितम्बर, 2023 में नई दिल्ली में होने वाले जी-20 के शिखर सम्मेलन और 23 अगस्त, 2023 में दक्षिण अफ्रीका में हुए ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में चीन की प्रतिस्पर्धा और स्पष्ट हो गयी। क्योंकि चीन चाहता है कि ब्रिक्स की सदस्य संख्या और बढ़ाई जाये, पर भारत चाहता है कि एक सुपरिभाषित व्यवस्था बनाये बगैर ब्रिक्स का विस्तार करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। चीन की चाहत जल्द से जल्द पश्चिमी देशों की बनाई विश्व-व्यवस्था के समानान्तर एक नई व्यवस्था खड़ी करने की है। यही कारण है कि भारत और चीन के दृष्टिकोणों का टकराव अब ब्रिक्स में देखने को मिल सकता है। भारत की कोशिश है कि 54 देशों के संगठन अफ्रीकन यूनियन को भी जी-20 का सदस्य बनाया जाये इससे इस समूह को वैश्विक प्रतिनिधित्व मिलेगा। भारत की 'ग्लोबल साउथ' योजना का यह भी एक हिस्सा है। वैसे अफ्रीकन यूनियन को शिखर सम्मेलनों में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है। उसकी सदस्यता को केवल औपचारिक रूप ही दिया जाना है। जी-20 में यूरोपीय देशों का प्रभाव और दबाव है। भारत चाहता है कि इसमें विकासशील देशों की बातों को स्वर मिले। यह ऐसा समूह है, जिसमें जी-7 देशों (कनाड़ा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, यूनाईटेड किंगडम, यू0एस0ए0) का समूह है। यह संगठन दुनियां की सात सबसे बड़ी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के साथ वैश्विक शुद्ध सम्पत्ति (डालर 280 ट्रिलियन) का 62 प्रतिशत से अधिक का प्रतिनिधित्व करते हैं और चीन-रूस गुट का सीधा टकराव देखने को मिल रहा है। इधर जी-20 घोषणा पत्र पर एक मत हो पाना बड़ा कठिन लग रहा है, कारण रूस-युक्रेन संकट क्योंकि अमेरिका के नेतृत्व में जी-7 देशों और चीन-रूस जोड़ी के बीच मतभेद बहुत गहरे हो चुके हैं।

युक्रेन युद्ध -

आज रूस-युक्रेन युद्ध प्रतिष्ठा की लड़ाई बन गयी है। इस युद्ध की पृष्ठभूमि में गत वर्ष जी-20 के बाली सम्मेलन में कूटनीतिक (डिप्लोमेटिक) टकराव की शुरूआत शुरू हुई थी तब समाधान वाली घोषणा की शब्दावली में हेर-फेर से काम निकल गया था। किन्तु इस बार रूस-चीन जोड़ी उस शब्दावली को भी स्वीकार नहीं करेगी, जिसे बाली में स्वीकार कर लिया गया था।

बाली सम्मेलन में मतभेद इस स्तर पर पहुँच गए थे कि एक सर्वसम्मत घोषणा पत्र बन पाने की नौबत नहीं आ रही थी। ऐसे में भारत की पहल पर घोषणा पत्र बन पाया और उस घोषणा पत्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उस प्रसिद्ध वाक्य को शामिल किया गया कि "आज लड़ाईयों का जमाना नहीं है।"इस वाक्य के जुड़ जाने से अमेरिकी राष्ट्रपति ने मोदी जी के नेतृत्व की तारीफ की थी। ध्यान रहे अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी देश और घोषणा पत्र के ही बाली बैठक का समापन चाहते थे। तब भारतीय प्रतिनिधियों ने संगठन के दूसरे विकासशील देशों के साथ मिलकर सहमति बनाने की कोशिश की तब घोषणापत्र जारी हो पाया। किन्तु कडवाहट

इस बात से भी समझी जा सकती है कि जी-20 बैठक में पहला मौका था जब सदस्य देशों की कोई ग्रुप फोटो तक नहीं हुई। यहाँ यह बताते चले कि 13-15 जुलाई, 2023 हम्पी (कर्नाटक) में जी-20 सम्मेलन में जी-7 देश युक्रेन युद्ध के कारण दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पड़े विपरीत प्रभाव को प्रस्ताव में शामिल कराना चाहते थे। वहीं रूसी पेशकश यह भी थी कि, अमेरिका ने जो पाबंदियाँ लगाई हैं, उसके विपरीत प्रभावों का भी जिक्र इसमें किया जाये।

राजनीतिक आइने में -

चीन का दृष्टिकोण है कि जी-20 का राजनीतिकरण नहीं होना चाहिए। किन्तु जो शब्दावलियाँ सामने आ रही हैं, उसमें प्रत्यक्ष रूप से वैश्विक सुरक्षा और वैश्विक विकास की आड़ में ही परोक्ष राजनीति हो रही है। जी-20 का अगला शिखर सम्मेलन ब्राजील में होना है, इसलिए उसकी दिलचस्पी इस गतिरोध को खत्म करने में है।

एस0सी0ओ0 (S.C.O.) -

जी-20 में भारत और चीन की दूरी दिखाई नहीं पड़ती, पर संघायी सहयोग संगठन (S.C.O.) और ब्रिक्स में दिखाई पड़ सकती है। एस0सी0ओ0 में भारत अकेला देश है, जो चीन के वन बेल्ट वन रोड़ (O.B.O.R.) कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं है बल्कि उसका विरोधी है। यह बात संगठन के भावी कार्यक्रमों में झलकेगी। विशेषकर आतंकवाद जैसे वैश्विक मसलों को लेकर पाकिस्तान को भारत घेरने का प्रस्ताव लायेगा जिसका चीन विरोध करेगा।

एस0सी0ओ0 पूरी तरह चीन और रूस के प्रभाव वाला संगठन है। जिसके सदस्य हैं (चीन, भारत, कजाकिस्तान, कीर्गिस्तान, रूस, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान) चार पर्यवेक्षक देश, 6 संवाद भागीदार देश शामिल हैं।

चीन इसे पश्चिमी समूहों के विरुद्ध खड़ा कर रहा है। रूस और चीन की भूमिका ब्रिक्स में भी है, जिसका प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है यह दोनों संगठन पश्चिमी वर्चस्व को चुनौती देने का काम कर सकते हैं। संगठन में हाल ही में ईरान और बेलारूस शामिल हुए हैं। (S.C.O.) विगत दिनों में ईरान और चीन के रिश्तों में सरगर्मी पैदा हुई है। इस संगठन में ईरान को लाया ही इसलिए गया कि भारत के असर को कम किया जा सके।

सम्प्रति भारत के मध्य एशिया के देशों के साथ रिश्ते, जो एस0सी0ओ0 में रहने के कारण बेहतर होते हैं। तो भारत इन देशों के साथ कारोबारी रिश्ते बेहतर करना चाहेगा। किन्तु इस कार्य में पाकिस्तानी अवरोध है वह हमें जमीनी रास्ते में जुड़ने नहीं देगा। इसके लिए हमें समुद्री रास्ते से ईरान के चाबहार और फिर वहां से जमीनी रास्ता पकड़कर ईरान से होते हुए मध्य एशिया तक जाने वाले उत्तर दक्षिण कारिडोर में भारत की दिलचस्पी है। इस हेतु ईरान और रूस का सहयोग चाहिए यह कार्य एस0सी0ओ0 के सहयोग से भी हो सकता है।

ब्रिक्स का विस्तार-

इस समय ब्रिक्स में 5 सदस्य हैं, पर बड़ी संख्या में नए देश इसकी सदस्यता चाहते हैं। भविष्य की वैश्विक राजनीति इन देशों के राष्ट्रीय हितों पर निर्भर करेगी। गत वर्ष चीन ने अपनी अध्यक्षता के समय ब्रिक्स के विस्तार की पेशकश की थी। लगभग 13 देशों ने औपचारिक रूप से सदस्य बनने की इच्छा व्यक्त की है। सवाल उठता है कि नई सदस्यता का आधार क्या हो? फिलहाल नये सदस्यो को जोड़ने में रूस, चीन, भारत अपने-अपने प्रभाव वाले देशों को सदस्यता दिलाना चाहते हैं।

फिलहाल 23 अगस्त को दक्षिण अफ्रीका में शिखर सम्मेलन में 6 नये देशों को सदस्यता प्रदान कर दी गई। यह देश हैं, अर्जेन्टीना, इथोपिया, मिश्र, ईरान, सऊदी अरब और यूएई। इन सदस्यों के जुड़ने से वैश्विक जी0डी0पी0 30 प्रतिशत हो जायेगी। ब्रिक्स की हिस्सेदारी 46 प्रतिशत वैश्विक आबादी में ब्रिक्स का योगदान जनवरी, 2024 से होगा। अनुमान लगाया जा रहा है कि, यह विस्तार रूसी-चीनी प्रभाव के कारण है। चीन, अमेरिका और जापान के बाद सऊदी अरब भारत का चैथा सबसे बड़ा कारोबारी सहयोगी है। भारत सबसे ज्यादा खनिज तेल सऊदी अरब से आयात करता है।

भारत उभरती अर्थव्यवस्था है, जिसके साथ अन्य देश बेहतर रिश्ते बनाना चाहते हैं। खाड़ी देशों में भारत के 85 लाख कामगार हैं जबकि यूएई की कुल आबादी के 30 फीसदी लोग भारतीय हैं। इससे जाहिर होता है कि भारत के हित इन देशों के साथ जुड़े हैं व इस्लामिक देशों के बीच भारतीय राजनय की अच्छी पैठ है।

जी-7 का महत्व -

जी-7 का मतलब है कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, ब्रिटेन और अमेरिका, भारत जी-7 का सदस्य नहीं है पर मई में जापान में हुए शिखर सम्मेलन में विशेष आमंत्रण पर मोदी जी इस बैठक में गये थे। सम्भावनायें यह भी हैं कि भारत को जी-7 का आठवां सदस्य के रूप में शामिल किया जा सकता है। जी-7 देशों ने चीन के 'बेल्ट एण्ड रोड'कार्यक्रम के जबाब में 'बिल्ड बैक बैटर वल्र्ड'(BBW) प्लान तैयार किया है। जिसका उद्देश्य विकासशील देशों में इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करना है। करीब 40 ट्रिलियन डालर का यह कार्यक्रम चीन के बेल्ट एण्ड रोड का विकल्प होगा।

जी-7 देशों का दुनिया की जी0डी0पी0 (1990) में 50 प्रतिशत से अधिक योगदान था। किन्तु अब 30 प्रतिशत के आसपास रह गया है। अगर इसकी आर्थिक शक्ति इसी तरह क्षीण होती रही, तो इसका राजनीतिक महत्व भी कम हो जायेगा। इस कारण जापान और अमेरिका इसका वैश्विक विस्तार करने की कोशिश में है। रूस और चीन इसकी गेस्ट लिस्ट से बाहर है।

निष्कर्ष -

एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य, अशान्ति अर्थात् वसुधैव कुटुम्बकम् जो भारतीय दर्शन के अनुसार जी-20 का कुटुम्ब बना, यहा पर भी बड़ी शक्तियों की सह और मात का खेल दिखाई दे रहा है। ऐसे में भारत का पलड़ा भारी दिख रहा है। इसके अतिरिक्त जो जी-20 समूह से फायदा होगा। वह भारत को फ्री ट्रेड का मौका मिलेगा। यह विश्व अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित प्रमुख मुद्दों जैसे अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय स्थिरता, जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण, भ्रष्टाचार विरोध और संधारणीय विकास हेतु कार्य करेगा। भारत की जी-20 सदस्य देशों से निवेश को आकर्षित करने के अवसर मिलेंगे। साथ ही इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और भारत जैसी प्रभावशाली अर्थव्यवस्थाएं शामिल होने से कई कूटनीतिक हित भी साधे जा सकते हैं। विशेषकर चीन, रूस, भारत और अमेरिका के मध्य जी-20 में सदस्य देशों को लेकर चल रही खींचतान प्रमुख होगी ऐसे में भारत को अत्यधिक सतर्कता व सूझबूझ से कदम बढ़ाने होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

डिफेंस मानीटर, अगस्त-सितम्बर, 2023
रूस-युक्रेन युद्ध के रणनीतिक सारांश, अशोक कुमार (2023) प्रथम संस्करण।
इण्डियन एक्सप्रेस डेली न्यूज, 28 सितम्बर, 2023
दैनिक जागरण, 4 सितम्बर 2023 कानपुर संस्करण।
ध्येय आई0ए0एस0 डेली करेंट अफेयर्स।
राष्ट्रीय सहारा, 20 सितम्बर, 2023
हिन्दुस्तान, 01 अक्टूबर, 2023
दृष्टि द विजन, जी-20 शिखर सम्मेलन (2023) अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध।
दैनिक आज, 11 सितम्बर, 2023

****